असफल और ऐतिहासिक प्रेम की तथ्यजन्य कल्पना–''शारदीया'' (जगदीश चन्द्रमाथुर)

डॉ0 सुनील कुमार

''शारदीया' में इतिहास यहाँ माथुर की निजी अनुभूति और कल्पना पर आधारित है, तभी 'शारदीया' का लक्ष्य इतिहास से अधिक ऐतिहासिक तथ्यजन्य कल्पना है। जिसमें स्थूल ऐतिहासिकता की अपेक्षा–अनुभूति और कल्पना पर आत्म परक अभिव्यक्ति है। जिसे नाटककार ने 19वीं शताब्दी के मराठा इतिहास की कुछ घटनाओं के सहारे विकसित किया है। 'इतिहास की मर्मस्पर्शी यथार्थता, काव्य की मनमोहक, रमणीयता और नाटक की प्रभुविष्णुता की त्रिवेणी का समाहार इस नाटक में सफलता के साथ हुआ है।''

'शारदीया' के संदर्भ में एक कलाकार के तौर पर अपनी अभिप्रेरणाओं का जिक्र करते हुए माथुर साहब ने लिखा है–मुझे नागपुर म्युजियम में एक असाधारण वस्त्र देखने को मिला। उसकी लम्बाई पाँच गज से कुछ अधिक यानी एक साड़ी के बराबर है, किन्तु वजन केवल पाँच तोला है। कपड़े की बुनाई अत्यन्त महीन है। म्यूजियम के अधिकारियों ने इस वस्त्र को शीशे से मंडित एक केस में प्रदर्शित कर रखा है। केस के नीचे इस असाधारण वस्त्र के निर्माण की कथा अंकित है। उसके अनुसार इस साड़ी या वस्त्र को ग्वालियर किले में एक तहखाने में बुना गया और इतनी बारीक बुनाई के लिए बुनकर ने अपने अंगूठे के भीतरी नाखून में सूराख कर लिया था, ताकि वह ठरक ठरकी यानी 'शटल' का काम दे सके। बुनने वाले व्यक्ति राष्ट्रद्रोह के अपराध में दौलत राव सिंधिया की आज्ञा से सन् 1975 में उस इतिहास प्रसिद्ध युद्ध में बन्दी बना लिया गया था, जिसमें मराठों ने अपनी संकुचित शक्ति से हैदराबाद के निजाम को बुरी तरह पराजित किया था। पहले तो सिंधिया ने उसे प्राणदण्ड की आज्ञा दी थी, किन्तु बाद में ग्वालियर के सरदार जिन्सेवाले के विशेष अनुरोध पर उसे आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया।